[This question paper contains 4 printed pages]

Roll No.	

ASME-23B-SKT-I

SANSKRIT (PAPER-I)

संस्कृतम् (पेपर-I)

Time Allowed : 3 Hours
समयः होरात्रयम् (घंटा-त्रयम्)

[Maximum Marks : 100
अधिकतमाः अङ्काः 100

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS
प्रश्नपत्र-सम्पृक्ताः विशेषनिर्देशाः

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.
कृपया प्रश्नोत्तरलेखनपूर्वं निम्नलिखितनिर्देशाः सावधानतया पठनीयाः

1. There are EIGHT questions divided in TWO Sections.
   खण्डद्वयेषु विभाजिताः अष्टौ प्रश्नाः ।
2. Candidate has to attempt FIVE questions in all.
   परीक्षार्थिभिः पञ्चैव प्रश्नाः समाधेयाः ।
3. Question Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रश्नसंख्या 1 तथा 5 अनिवार्ये । शेषप्रश्नेषु त्रयाणां समाधानं प्रदेयम् । तत्र प्रत्येकखण्डात् एकम् अवश्यं करणीयम् । प्रत्येकप्रश्नस्य तस्य भागस्य च अङ्काः तत्रैव निर्दिष्टाः ।
4. Question Nos. 1, 5 and 8 must be answered in SANSKRIT and the remaining questions must be answered either in SANSKRIT or in the medium authorized in the Admission Certificate. Answer written in SANSKRIT must be in Devanagari script. Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
   प्रश्नसंख्या 1, 5 तथा 8 संस्कृतभाषयैव समाधेयाः । शेषप्रश्नानां समाधानं यथेच्छं संस्कृतभाषया अथवा प्रवेशपत्रे स्वीकृत-भाषया करणीयम् । संस्कृतभाषा देवनागरी-लिप्या एव लेखनीया । प्रश्नोत्तरस्य शब्दसीमा यदि क्वापि निर्धारिता तर्हि सा सीमा पालनीया ।
5. Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   प्रश्नक्रमानुसारमेव क्रमेण प्रश्नोत्तराणि प्रदेयानि । अंशतः प्रदत्तं प्रश्नोत्तरमपि संपूर्णप्रश्नोत्तरवत् परिगणितं भविष्यति । यदि उत्तरपुस्तिकायां किमपि पृष्ठं रिक्तं (अलिखितं) स्यात् तर्हि तत्र स्पष्टरूपेण अनुलोम-विलोमरेखा (x) विधेया ।
6. Re-evaluation/Re-checking of answer-book of the candidate is not allowed.
   परीक्षार्थिनः उत्तरपुस्तिकायाः पुनर्मूल्याङ्कनस्य पुनर्निरीक्षणस्य वा अनुमतिर्नास्ति ।

खण्ड-A / Section-A

1. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः संस्कृतभाषया समाधेयाः –

Answer all of the following (to be written in Sanskrit language):

(a) अधोनिर्दिष्टाः सर्वे प्रश्नाः संस्कृतभाषया समाधेयाः – 2 × 5 =10

(i) वन्दनङ्करोमि - सन्धिविच्छेदं कृत्वा परसवर्णादेशविधायकं सूत्रं लिखत।

(ii) अदेङ् गुणः – अत्र तकारस्य कोऽर्थः? सूत्रोल्लेखपूर्वकं व्याकुरुत।

(iii) एदैतोः कण्ठतालु - एदैतोः इति पदस्य सन्धिविच्छेदं कृत्वा सवर्णसञ्ज्ञाविधायकसूत्रं लिखत।

(iv) खादन्+अपि इत्यत्र सूत्रोल्लेखपूर्वकं सन्धिकार्यं विधेयम्।

(v) वने इति = वन इति - अत्र सूत्रोल्लेखपूर्वकं प्रक्रियासिद्धिःकर्तव्या ?

(b) अधोनिर्दिष्टाः सर्वे प्रश्नाः संस्कृतभाषया समाधेयाः – 2 × 5 =10

(i) वागार्थाविव इत्यत्र लौकिकालौकिकविग्रहपूर्वकं समासनाम लिखत।

(ii) अव्ययस्य केष्वर्थेषु समर्थेन सुबन्तेन सह समस्यते ? सूत्रोल्लेखपूर्वकं व्याकुरुत।

(iii) वृद्धिसन्धिः गुणापवादः कथं भवति ?

(iv) भवन्तः क्व तिष्ठन्ति ?- वाच्यपरिवर्तनं क्रियताम्।

(v) चर्मणि द्वीपिनं हन्ति- रेखाङ्कितपदे सूत्रोल्लेखपूर्वकं विभक्तिप्रयोगः विधेयः।

2. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –

Answer all of the following:

(a) भारतीयभाषाविज्ञानपरम्परायां संस्कृतभाषायाः वैशिष्ट्यं प्रतिपाद्यताम्। 10

Describe the significance of Sanskrit Language in the Indian Linguistic Tradition.

(b) संस्कृतवाङ्मयस्य भेदोपभेदान् लिखत। 10

Write division and subdivisions of Sanskrit Verbal Discourse.

3. संस्कृतकाव्यशास्त्रीयदृशा अधोलिखितस्य श्लोकस्य सविस्तरं समालोच्यताम्।

Elaborate critically the following verse given below in the light of Sanskrit Poetics.

(a) औचितीमनुधावन्ति सर्वे ध्वनिरसोन्नयाः। 10

गुणालङ्काररीतीनां नयाश्चानृजुवाङ्मयाः॥

"Dhvani, Rasa, and Unnaya, (these three schools of thought in Sanskrit Literary Criticism) run after Aucitya.

Guṇa, Alaṁkāra and Rīti, (these three schools of thought in Sanskrit Literary Criticism) run after Vakrokti".

(b) अपारे काव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः । 10

यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते ॥

"A literary artist alone is the creator of the world of literary art. He or she transforms the given world into a world of art as per his or her liking".

4. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –

Answer all of the following:

(a) भारतीयसंस्कृतेःसार्वभौमिकविकासे पूर्वमीमांसादर्शनस्य योगदानं विवृणुत । 10

Describe the contribution of Pūrva-Mīmāṁsā Philosophical System in the undiversified development of Indian culture.

(b) न्यायवैशेषिकदर्शने नव्यन्याभाषायाः वैशिष्ट्यं विविच्यताम् । 10

Examine peculiar attributes of Navya-Nyāya Language in the Nyāya-Vaiśeṣika Philosophical System.

खण्ड-B / Section-B

5. अधोलिखितस्य गद्यांशस्य संस्कृतानुवादो विधीयताम् : 20

Translate the following passage into Sanskrit:

भारतीय बौद्धिक परम्परा अध्यात्म केन्द्रित है। आध्यात्मिक चिन्तन का परमोद्देश्य मुक्तावस्था की प्राप्ति है। मनुष्य का अभ्युदयात्मक विकास मुक्तावस्था की प्राप्ति में साधन के रूप में माना जाता है। इसीलिए शास्त्रकारों ने जहाँ से अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति होती है उसे ही धर्म कहा है। अविद्या से अभ्युदय एवं विद्या से निःश्रेयस की प्राप्ति होती है। दोनों प्रकार की विद्याओं का ज्ञान होना आवश्यक है। अविद्या से भौतिकजीवन सुखमय होता है। विद्या से आध्यात्मिक जीवन सुखमय होता है। भौतिक आनन्द की कोई ऊपरी सीमा नहीं है। भौतिक आनन्द विषयिणी एक इच्छा की पूर्ति होने पर वही कई अन्य इच्छाओं को उत्पन्न करती है। मनुष्य तत्काल अन्य इच्छा की पूर्ति में लग जाता है, जिससे स्थायी एवम् अनन्त सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती है। आध्यात्मिक आनन्द को निःश्रेयस कहा जाता है। आध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति हो जाने पर कोई अन्य इच्छा उत्पन्न ही नहीं होती है। इसीलिए आध्यात्मिक आनन्द परमानन्द के रूप में जाना जाता है। अनन्त सुख की प्राप्ति ही भारतीय दर्शन का परम लक्ष्य है। अनन्त सुख की प्राप्ति ही मनुष्य की मुक्तावस्था के रूप में ज्ञेय है।

अथवा

Indian Intellectual Tradition is spiritual centric. The ultimate aim of spiritual centric thinking is to attain deconditioned stage. The Materialistic development of human being is treated as an instrument for attaining deconditioned stage. That is why the Sanskrit scholars said: from where materialistic and spiritual development are attained is known as Dharma. Avidyā is responsible for obtaining materialistic development and Vidyā is responsible for obtaining spiritual development. Knowledge of both types of Vidyās is required. Material life becomes happy through Avidyā. Spiritual life becomes happy through Vidyā. There is no upper limit of material happiness. When one desire of material pleasure is fulfilled, it generates many other desires. Human being immediately gets busy in fulfilling other desires, due to which permanent and infinite happiness is not attained. Spiritual pleasure is called real bliss. When spiritual pleasure is attained, no other desire arises. That is why spiritual pleasure is known as Paramānanda. The attainment of infinite happiness is the ultimate goal of Indian philosophy. Attaining infinite happiness is knowable as the deconditioned stage of human being.

6. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –
Answer all of the following:

(a) "योगः समाधिः"- सविस्तरं विविच्यताम्। 10
Elaborate critically - Yogaḥ Samādhiḥ

(b) बौद्धदर्शनस्य प्रमाणमीमांसा विविच्यताम्। 10
Describe critically epistemology of Bauddhist Philosophy.

7. अधोलिखिताः सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः –
Answer all of the following:

(a) एकस्य सतो विवर्तः कार्यजातम्– व्याख्यायताम् 10

Explain the whole series of effects being as a mere evolution from a single real entity.

(b) भारतीयज्ञानपरम्परायां पुरुषार्थचतुष्टयस्य सामाजिक-उपादेयत्वं विशदयत। 10

Discourse on the societal application of four-fold of human goals in the Indian Knowledge Tradition.

8- अधोलिखितं विषयमवलम्ब्य संस्कृतभाषायाम् एको निबन्धो लिख्यताम्: 20
Write an essay in Sanskrit on one of the following topics:

भारतीयज्ञानपरम्परा (Indian Knowledge Systems)

अथवा

राष्ट्रियशिक्षानीतौ-2020 संस्कृतम् (Sanskrit in National Education Policy-2020)